कोरोना वाइरस डिजीज़–19 (COVID-19)

प्रोफेसर मदन लाल बह्मह भट्ट, कुलपति, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ

कोविड–19 एक बीमारी है जो वाइरस (विषाणु) जनित है, जिसका प्रथम मरीज 31 दिसम्बर 2019 को यूहान, चीन में देखा गया। इसे कोरोना वाइरस डिजीज़–19 (COVID-19) के नाम से विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा नामित किया गया है। इस बीमारी का आधिकारिक नाम SARS-CoV-2 (Severe acute respiratory syndrome-Coronavirus disease-2) है। मार्च 2020 तक यह बीमारी विश्व में एक महामारी का रूप ले चुकी है, जिसके चपेट में लगभग 190 से ज्यादा देश आ चुके हैं। आरम्भ में इसके अधिकतर रोगी चीन के यूहान प्रांत में हुए, जहॉ पर इस बीमारी का आरम्भ हुआ। विश्व के लगभग आरम्भिक 1 लाख मरीजों में 80000 से ज्यादा चीनी नागरिक थे। वर्तमान में (25 मार्च 2020 तक) यह संख्या 400000 के ऊपर पहुंच गई है। लगभग 16500 लोगो की मृत्यु कोविड–19 से विश्व में हो चुकी है।

चीन ने युद्ध स्तर पर इस बीमारी का सामना करने के लिए एक बहुत व्यापक एवं वृहद कार्यक्रम अपनाते हुए, बीमारी को आगे फैलने से रोकने में पर्याप्त सफलता प्राप्त कर ली है। लेकिन बीमारी का केन्द्र (Epicentre) इटली पहुंच गया है। यह बीमारी बहुत तेजी से विश्व के अन्य देशों में फैलती जा रही है। भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा राष्ट्र है, लेकिन इस महामारी के मरीजों की दृष्टि से लगभग 40वें पायदान पर है। इसके लिए भारत सरकार द्वारा आरम्भ से ही इस बीमारी को रोकने के लिए प्रभावी कदम गम्भीरता से उठाये गये। लेकिन संकट के बादल और भी गहराते जा रहें हैं। इस बीमारी में एक महत्वपूर्ण पहल पर आरम्भ में ही चर्चा कर लेना आवश्यक है। कोविड–19 की फरवरी 2020 तक की रिपोर्ट के अनुसार, आरम्भिक 71, 314 मरीजों में मृत्यु दर बढ़ती उम्र के साथ बढ़ती देखी गई।

उम्र	मृत्यु दर
0–19 वर्ष	0.02 प्रतिशत
20–29 वर्ष	0.09 प्रतिशत
30–39 वर्ष	0.18 प्रतिशत
40–49 वर्ष	0.40 प्रतिशत
50–59 वर्ष	1.3 प्रतिशत
60–69 वर्ष	4.6 प्रतिशत
70–79 वर्ष	9.8 प्रतिशत
80 और अधिक	18 प्रतिशत

स्रोत (Source) : Adjusted age specific case fatality ratio during the COVID – 19 Epidemic in Hubei, China Jan-Feb 2020 med Rxiv by Christina Animashaun/VOX

इटली में भी भारी संख्या में मृत्यु का कारण भी वृद्धजनों का इस बीमारी की चपेट में आना तथा ज्यादातर वुद्धों का कुछ–न–कुछ अन्य बीमारी से ग्रसित होना बताया जा रहा है। नवयुवकों में बीमारी ज्यादा भयावह रूप नहीं ले पा रही है, जिसको ध्यान में रखते हुए इजराइल ने अपने देश में सारी आवश्यक उपभोक्ता एवं भोजन सामग्री की आपूर्ति नौजवान–युवा एवं युवतियों के माध्यम से करवा रहे हैं।

सबसे ज्यादा चिंता की बात जो देखी गई , वह यह थी कि 20 वर्ष से कम आयु के रोगियों में या तो कोई भी लक्षण नहीं थे, या बिल्कुल नगण्य। यदि केवल लक्षण के आधार पर कोविड–19 की जांच/परीक्षण किया जाता है तो ये ज्यादातर मरीजों में बीमारी का पता भी नही चलता है, और वे लगातार समुदाय के बीच में बीमारी फैलाते रहते हैं, जैसा कि इटली में देखा गया।

अतः इस बीमारी की महामारी से बचने के लिए मास स्क्रीनिंग की अवश्यकता होगी लेकिन इसकी क्षमता बहुत कम देशों के पास है। इसके अन्तर्गत वे सभी नागरिक जो संक्रमित देशों से कुछ दिनों पूर्व यात्रा करके वापस आयें हैं, अथवा वे व्यक्ति जो कोविड 19 के रोगियों के सम्पर्क में आये हैं उन्हे क्वारिंटीन करने की आवश्यकता है। यह अवधि 15 दिन की होनी चाहिए। इस बीमारी का इन्क्यूबेशन काल 5–6 दिन का है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि रोगियों का इलाज आइसोलेसन वार्ड में सभी बचाव के साथ करना चाहिए।

आइये कोरोना वाइरस संक्रमण के प्रमुख लक्षणों पर विचार कर लेते हैं। यह पुनः ध्यान करने की आवश्यकता है कि कुछ रोगी पूर्णतः लक्षण मुक्त हो सकते है, खासतौर पर बच्चे अथवा युवा संक्रमित व्यक्ति। ये लोग फिर भी रोग फैलाने की क्षमता रखते हैं। इस बीमारी के प्रमुख लक्षणों में बुखार सूखी खांसी एवं सांस का फूलना के लक्षण देखे गये है। शरीर में थकावट एवं शारीरिक श्रम के समय सांस का फूलना भी इसके लक्षण ज्यादातर रोगियों में पाये जाते है। नाक का बहना भी कुछ मरीजों मे देखा जा सकता है, किंतु छींक लगभग नगण्य रोगियों में देखा गया है। गले में खरास का होना, शरीर में दर्द एवं मांस पेशियों में दर्द तथा दस्त का होना भी इसका आरम्भिक लक्षण हो सकता है। यह बीमारी वृद्ध एवं ऐसे लोगों में जिन्हे अन्य जीर्ण रोग भी पहले से है, ज्यादा आसानी से सक्रंमित करती है एवं ज्यादा गम्भीर एवं भयानक रूप ले सकती है।

संक्रमण की स्थिति में उठाने वाले **प्रमुख कदम** निम्नलिखित हैंः–

- अलग से रहने की व्यवस्था के साथ ही पूर्ण आराम, पर्याप्त मात्रा में पानी एवं हल्का सुपाच्य भोजन देना चाहिए।
- मरीज एव परिजनों को धबराना नही चाहिए, इससे बचें।
- निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र को सूचित करना चाहिए।
- गरम पेय पदार्थ तथा गुनगुने पानी का प्रयोग करना चाहिए। सम्भावित रोगी के द्वारा स्पर्श की गई वस्तुओं के प्रयोग से बचने की अवश्यकता है।

- छींक अथवा खांसी के समय गले अथवा नाक का स्राव जिस स्थान पर बूंदे गिरती है, उसे स्पर्श करने पर मुख, नाक के पास संक्रमित हाथ के जाने पर संक्रमण होने का खतरा सबसे ज्यादा होता है। – इससे बचें।

कोरोना वाइरस सक्रमण की जॉच किन लोगों को करानी चाहिए (द्वारा आई0सी0एम0आर0, नई, दिल्ली):–

1. यह जॉच केवल उन व्यक्तियों को करानी है जिनमें इस बीमारी के लक्षण है जैसेः– बुखार खॉसी के साथ सॉस लेने में तकलीफ और वे पिछले चौदह दिनों में विदेश यात्रा से आये है।
2. ऐसे व्यक्ति जिनमें इस बीमारी के लक्षण है बुखार खॉसी के साथ सॉस लेने में तकलीफ और वे लैब द्वारा कोरोना वायरस की पुष्टि हुये मरीज से सम्पर्क हुआ हों।
3. ऐसे व्यक्ति जिनमें इस बीमारी के लक्षण है बुखार खॉसी के साथ सॉस लेने में तकलीफ और वे हेल्थ वर्कर है।
4. ऐसे मरीज जो अति गम्भीर छाती की बीमारी (SARI) की वजह से अस्पताल में भर्ती है।

5(a) ऐसे व्यक्ति जो कोरोना वायरस की पुष्टि हुये मरीज के साथ घर में रह रहें हों।

5(b) ऐसे हेल्थ वर्कर जिन्होने कोरोना वायरस की पुष्टि हुये मरीज का परीक्षण बिना किसी समुचित सुरक्षात्मक उपाय (WHO के अनुसार) के बिना किया हों।

उक्त जॉच का सैम्पल सम्बन्धित व्यक्ति के घर पर ही सी0एम0ओ0 की टीम द्वारा लिया जायेगा।

द्वाराः आई0सी0एम0आर0, नई दिल्ली

कोरोना बीमारी की जॉच की विधिः–

इस संक्रमण बीमारी की जॉच की विधि अन्य संक्रमण बीमारियों की जॉच की विधि की अपेक्षा तकनीकी रूप से थोड़ा कठिन है। इस बीमारी में सर्वप्रथम संक्रमण से संदिग्ध व्यक्ति के थ्रोट स्वैब (Throat Swab) का नमूना प्रशिक्षित टेक्नीशियन द्वारा समस्त आवश्यक सुरक्षात्मक उपायों के साथ लिया जाता है तदोपरान्त पी0सी0आर0 मशीन के द्वारा उक्त नमूना का परीक्षण किया जाता है। लगभग 24 घण्टे के पश्चात उक्त जॉच का परिणाम आता है कि संदिग्ध मरीज कोरोना वाइरस से ग्रसित है अथवा नहीं है। उक्त जॉच का परिमाण सकारात्मक आता है तो परिणामतः मरीज को कोरोना संक्रमण से ग्रसित माना जाता है। ऐसे व्यक्ति का इलाज आइसोलेशन वार्ड में करने की आवश्यकता होती है।

कोरोना वाईरस संक्रमण से बचाव ही उपचार है।

यब बीमारी अभी तक कुल 4 प्रतिशत रोगियों में मृत्यु का कारण देखी गई है। इसकी तुलना अन्य विषाणुओं यथा सार्स 2003 (Severe Acute Respiratory Syndrome) मर्स (Middle East Respiratory Syndrome) या इबोला (Ebola) संक्रमण से किया जाय तो कोविड–19 की मृत्यु दर कम है। लेकिन इस बीमारी के संक्रमण की सम्भावना कहीं ज्यादा है। सम्पर्क में आये व्यक्तियों में फैलने की क्षमता इस बीमारी की काफी ज्यादा है। अतः इससे बचाव ही महामारी से बचने का प्रमुख उपाय है।

बचाव के कुछ प्रमुख तरीके निम्नलिखित हैः–

क्या करेंः–

1. बार–बार हस्त प्रच्छालन एवं व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान। साबुन को हाथ से कम–से कम 20 सैकेण्ड धोना अथवा अल्कोहल आधारित जेल, सैनेटाइजर्स का प्रयोग।
2. समाजिक दूरी को बनाये रखना : समाजिक दूरी के लिए सभी प्रकार के समाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यक्रम जहां पर भीड़ के एकत्रित होने की सम्भावना है, उनपर पूर्ण रोक लगनी चाहिए। सिनेमा, शापिंग माल एवं भीड़–भाड़ वाले जगहों से बचने की आवश्यकता है। समस्त शिक्षण संस्थान बंद कर दिये जायें। अनावश्यक यात्रा से बचें और जितना हो सके पब्लिक ट्रांसपोर्ट के प्रयोग से बचे। आफिस जाने के बजाय, यदि घर से कार्य कर सकते हैं, तो ज्यादा सुरक्षित है। लॉक डाउन की स्थिति में अनुशासन के साथ सहयेाग करें।

   अत्यंत आवश्यक सुविधाएं ही खुली रखी जाये, यथा अस्पताल एवं घरेलू प्रयोग तथा खाद्य सामग्री की दुकानें।
3. छींक आने पर कुहनियों से नाक को ढ़के अथवा टिस्सू पेपर का प्रयोग करे एवं तो उसे तत्काल सुरक्षित निस्तारण करें।
4. यदि खांसी एवं बुखार के लक्षण हो तो घर पर आइसोलेशन में समय बितायें तथा चिकित्सक से सलाह लें।
5. नजला जैसे लक्षण होने पर अथवा कोरोना संक्रमित स्थान पर ही मास्क लगायें अनावश्यक रूप से मास्क न लगाये।
6. यदि किसी कोबिड–19 के मरीज के सम्पर्क में आये हैं तो 2 सप्ताह तक क्वारंटीन में रहें।
7. विदेश यात्रा से आए नागरिकों से दूर रहें एवं उनकी शासन को सूचना दें।

क्या न करेंः–

1. यदि खांसी या बुखार हो तो किसी के सम्पर्क में न आये और यदि किसी को सर्दी, खांसी या फ्लू जैसे लक्षण हो तो उससे सम्पर्क न बनायें।
2. सार्वजनिक स्थानों पर न थूकें।

3. जीवित पशुओं के सम्पर्क में आने से बचें तथा कच्चे अथवा अधपके मांस, सी–फूड तथा अण्डों के सेवन से बचें।
4. खेतों में न घूमें, जीवित पशुओं के बाजारों में जानवरों के वध किये जाने वाले स्थलों पर न जायें।
5. चिकित्सक के सलाह के बिना दवा का सेवन न करें।
6. फिलहाल पर्यटक/पर्यटन स्थल से दूर रहें। विशेष रूप से संक्रमित देशों की यात्रा यथाः चीन, इटली, स्पेन, फ्रांस, स्विटरलैण्ड,इरान, साउथ कोरिया, जापान, सिंगापुर, मलेशिया, अमेरिका, कनाडा, यू0के0, आस्ट्रेलियॉ, जर्मनी, जापान, थाईलेण्ड एवं फिलीपीन जैसे देशों से वापस आये यात्रियों के सम्पर्क से बचें।

वर्तमान स्थितिः विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी को एक वैश्विक महामारी का दर्जा दे दिया है। इस महामारी को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक गम्भीर (Very high category) में रखा गया है। अब तक इस महामारी से विश्व के 190 से अधिक देशों में अबतक 4,00,000 से अधिक मरीज संक्रमित पाये गये हैं और कुल 15000 से अधिक मरीजों की मृत्यु हो चुकी है। बीमारी तेजी से फैल रही है। वर्तमान में इसका केन्द्र चीन से हटकर यूरोप में इटली में आ गया है। विश्व स्वास्थ्य संगइन ने कोविड-19 को एक विश्व महामारी का दर्जा दे दिया है। डायमण्ड प्रिंसेज शिप जो एक अंग्रजी जहाज है, जो जापान के पास था जिसके 712 यात्रियों को कोविड-19 की चपेट में देखा गया जिसमें कुल 3711 यात्री थे। इस जहाज में 138 भारतीय थे जिनमें संक्रमण देखा गया। इन 138 मरीजों में जहाज के 132 चालक/परिचालक तथा कर्मचारी एवं 6 भारतीय यात्री थे।

किसी महामारी के विकास के चार कदम होते है। **प्रथम चरण** में कुछ रोगी विदेश से देश में प्रवेश होते है। **द्वितीय चरण** में कोविड–19 के रोगियों से सम्पर्क में आने वाले लोगों में रोग फैलता है। **तृतीय चरण** में सामुदायिक फैलाव देखा जाता है, जहां पर न तो किसी रोगी के बाहर से आने की बात होती है, और न तो किसी रोगी के साथ सम्पर्क में आने की बात होती है बल्कि समाज में बीमारी अज्ञात स्रोतों से फैलती देखी जाती है। बीमारी फैलते – फैलते जब देश के बड़े भूभाग के बड़े जन समुदाय में फैल जाती है तो इसे **चौथा चरण** एवं बीमारी को महामारी कहा जाता है। वर्तमान में हमारे देश में कोविड–19 की बीमारी अपने विकास के द्वितीय चरण में है। इस बीमारी की चपेट में आज तक 532 मरीज आ चके हैं और 10 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। (24 मार्च–2020 तक)। भारत में ज्यादातर मरीज या तो विदेशों से आये हैं (Imported cases) अथवा स्थानीय फैलाव (Local spread) के माध्यम से। अतः विश्व स्वास्थ्य संगठन के हवाले से भारत में द्वितीय चरण की महामारी कहा जा रहा है। अबतक लगभग 15 प्रतिशत मरीजों में बीमारी के स्रोत का ठीक पता न होने के कारण समुदायिक फैलाव (Community spread) का आरम्भ माना जा सकता है। इसे ही ध्यान में रखते हुए प्रधान मंत्री जी ने 22 मार्च-2020 को जनता कफ्र्यू का आहवान किया तथा रेल एवं हवाई यात्रायें रोकी गई हैं। लॉक डाउन का निर्णय भी कई प्रदेशों एवं राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण एवं जिम्मेदारीपूर्ण निर्णय है। भारत एवं प्रदेश सरकार बधाई की पात्र हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सराहनी एवं साहसिक कदमों के कारण ही लगभग 24 करोड़ आबादी वाले प्रदेश में अभी 24 मरीजों का पाया जाना तथा

सबको सहज एवं सफल इलाज की उपलब्धता के कारण एक भी मरीज की मृत्यु का न होना, एक शुभ संकेत है। यदि यहीं इसके आगे फैलने से रोक थाम में हम सफल हो जातें हैं तो यह देश की एक बड़ी सफलता होगी। इसके लिए सरकारी प्रयास के साथ ही समाज के प्रत्येक नागरिक से जिम्मेदार व्यवहार एवं सहयोग की अपेक्षा है। अतः इस बीमारी को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास के द्वारा आगे फैलने से रोकने की सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है।

NB : प्रधानमंत्री जी, भारत सरकार द्वारा 24 मार्च 2020 को मध्यरात्रि से 21 दिन का लॉक डाउन इस महामारी पर प्रभावी रोक लगाने की दिशा में एक अति साहसिक कदम है, जिसकी सभी मेडिकल प्रोफेसन्स द्वारा भूरि–2 प्रशंसा की जा रही है। जनता का 100 प्रतिशत सहयोग ही इसके शत प्रतिशत उद्धेश्यों की प्रगति को सुनिश्चित करेगा। स्वस्थ्य भारत समर्थ भारत की कामना के साथ।

प्रो0 मदल लाल ब्रह्म भट्ट
कुलपति, के0जी0एम0,यू0
लखनऊ
drmlbbhatt@yahoo.com